भारतीय मूर्तिकला और मन्दिर स्थापत्य

अध्याय–9

मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला और स्थापत्य

भारतीय कला का काल विभाजन इतिहास के आधार पर ही पूर्व, मध्य और उत्तरमध्य काल के युगमान में साधारणतः किया जाता है। यह परिधियाँ निःसन्देह ऐतिहासिक युगधारा पर आधारित हैं और यह कहना आवश्यक नहीं है कि कला व इतिहास के काल परिणाम सदा समान नहीं होते। सांस्कृतिक एवं कलात्मक पदचिन्ह काल विधान के मोहताज नहीं होते, वरन् वे अपनी सार्थकता की स्मृति भविष्य के भाल (ललाट) पर छोड़ जाते हैं।

मूलतः ऐतिहासिक काल निर्धारण राजकुलों के उत्कर्ष–अपकर्ष, उदय–पतन और आकस्मिक राजनीतिक घटनाओं से युगपत बदलाव का लेखा–जोखा है किन्तु कला इन परिवर्तनों, राजकीय संरक्षण एवं सामाजिक धार्मिक परिवर्तनों के चलते इतिहास के युगों का अतिक्रमण कर जाती है।

यहाँ मध्यकाल (600 ई. से 900 ई. पूर्व मध्य और 900 से 1200 ई. उत्तर मध्य) को स्थायी विभाजन न मानकर कला विकास, शैलियों में परिवर्तन और कला रुपों में आये बदलावों को लेकर उनके अध्ययन की दृष्टि से किया गया है। भारतीय इतिहास में गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात समग्र भारत की अवधारणा के विखण्डन के फलस्वरुप उत्तर गुप्तकाल में अनेक नवीन स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई। इनमें मालवा–मगध में उत्तर–गुप्त, उत्तर–मध्यभारत में कन्नौज़ का वर्धन वंश और दक्षिण में चालुक्य, राष्ट्रकूट और पल्लव राजवंश प्रमुख थे।

उपरोक्त सभी राजवंश एक दूसरे के समकालीन रहे, फलस्वरुप अनेक राजनीतिक उतार–चढ़ाव एवं ऐतिहासिक घटनाक्रमों ने राज्यों के मध्य क्षेत्रीय सीमाएं अवश्य निर्धारित कर दीं। लेकिन निर्बाध चली आ रही गुप्तकालीन सांस्कृतिक एवं कलात्मक परम्पराएँ कालान्तर में भी आध्यात्म भावभूमि पर अविरल प्रवाहमान रहीं। फिर चाहे वो बौद्ध, हिन्दू और जैन आदि किसी भी धर्म सम्प्रदाय से सम्बद्ध क्यों न हो, सभी में कलात्मक साहचर्य एवं भावगत एकरुपता अविभाज्य है। इनमें प्रधान देवप्रतिमा ही मात्र धर्म विशेष का संकेत सूचक जान पड़ती हैं।

कला इतिहास की दृष्टि से उत्तर भारत के सम्राट हर्षवर्धन महत्वपूर्ण हैं, जो वीर योद्धा एवं कुशल प्रशासक के साथ–साथ कला प्रेमी भी थे, उनके कलात्मक प्रेम की पुष्टि हमें चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांत से होती है। ह्वेनसांग ने नालन्दा विश्वविद्यालय, विभिन्न मंदिरों एवं हर्ष रचित साहित्य का उल्लेख किया है। 620 ई. में 'उत्तरापथनाथ' नरेश हर्षवर्धन को हराकर चालुक्यवंशीय राजा पुलेकेशियन द्वितीय ने अपने साम्राज्य का पश्चिम–मध्य भारत तक विस्तार कर नासिक को राजधानी बना सकल 'दक्षिणोपथनाथ' की उपाधि का वरण किया।

सातवीं सदी का पूर्वाह्न चालुक्यकालीन कला का चरमोत्कर्ष था। इसी समय के मन्दिरों में ऐहोल का दुर्गा मंदिर 550 ई., बादामी के गुफा मंदिर श्रृंखला में विष्णु मंदिर 578 ई., पटकदल में लोकेश्वर शिव को समर्पित पापनाथ एवं विरुपाक्ष मंदिर 740 ई. आदि के वास्तु एवं मूर्तन की समृद्ध परम्परा का उत्कर्ष एलोरा के गुफा मंदिरों में पूरे वैभव के साथ देखा जा सकता है।

कालान्तर में दक्षिण के शक्तिशाली क्षत्रप दंतीदुर्ग ने 753 ई. में पुलेकेशिन द्वितीय को परास्त कर दक्षिण में राष्ट्रकूटों की सत्ता स्थापित की। इसी वंश के प्रतापी राजा कृष्ण राय प्रथम ने विश्व प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया।

ऐलोरा

पूर्व मध्यकालीन मूर्तिकला एवं स्थापत्य के प्रमुख केन्द्र के रुप में ऐलोरा (वेरुल) का महत्व सर्वोपरि है। औरंगाबाद से 55 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ऐलोरा धार्मिक त्रिवेणी है जो बौद्ध, हिन्दू और जैन धर्म के आपसी साहचर्य एवं कलात्मक ऐक्य का साक्षात प्रतिरूप है। 8वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में निर्मित 34 गुफाओं के विशाल कला संसार में गुफा संख्या एक से 12 तक बौद्ध धर्म और 13 से 29 तक हिन्दू धर्म को समर्पित है वहीं शेष पाँच गुफाएं जैन धर्म की दार्शनिकता को परिलक्षित करती हैं।

विशाल मूर्तन, बेजोड़ अलंकृत स्तम्भों और आध्यात्मिक भावनाओं से युक्त ऐलोरा के सभी मंदिर बारदरी शैली (एकाश्म शैली) में एक ही पर्वत में कटे व दो या तीन मंजिले हैं। इन गुफा मंदिरों का निर्माण चालुक्य काल से राष्ट्रकूटों के समय तक चलता रहा। चालुक्य कालीन गुफाओं में मुख्य रूप से तीन मंजिला गुफा संख्या 12 विश्वकर्मा मंदिर, बुद्ध के सात मानुषी रूपों के मूर्तन को लेकर विशेष प्रसिद्ध है। गुफा संख्या 15 दशावतार मंदिर, जिसमें विष्णु के नृसिंहावतार एवं अन्य पौराणिक कथाओं का सुन्दर मूर्तन है।

लेकिन इन सबसे अधिक वैभवशाली एवं मूर्तन की समृद्धता का साक्षात है राष्ट्रकूट राजा कृष्ण राम प्रथम द्वारा निर्मित गुफा संख्या 16 का कैलाशनाथ मंदिर, जिसे रंगमहल भी कहते हैं। इस भव्य मंदिर का निर्माण 757 –790 ई. के मध्य हुआ। संसार के असाधारण मंदिरों में शामिल कैलाशनाथ मंदिर का सृजन एकल पर्वत को तराश कर 276 फीट गहरे, 154 फीट चौड़े और 120 फीट ऊँचे खुले आंगन में स्वतंत्र मंदिर के रुप में किया गया है। कला इतिहासकार डॉ. आनन्द के. स्वामी के मतानुसार कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण पट्टकदल के विरुपाक्ष मंदिर का ध्यान में रखकर बेसर शैली में किया गया है। (चित्र संख्या–1)

गौपुरम से मंदिर के प्रवेश द्वार के ठीक सामने खुले आंगन के मध्य स्थित विशाल शिवालय के दोनों तरफ 60 फीट ऊँचे अंलकृत विशाल स्तंभ और स्तंभों के पास विशाल गजराज स्वतंत्र रुप से मूर्तमान होकर मंदिर की भव्यता को बढ़ा रहे हैं। मुख्य मंदिर में प्रवेश द्वार नंदी के मण्डप से निर्मित है, जिससे होकर हम सोलह अलंकृत स्तंभों से युक्त मण्डप के प्रार्थना कक्ष में पहुँचते हैं। मण्डप के ठीक सम्मुख मध्य में थोड़ा ऊपर स्थित गर्भ गृह में विशाल शिवलिंग सुशोभित है। गर्भ गृह पर स्थित 96 फीट ऊँचा मस्तकशिखर द्रविड़ शैली में निर्मित है। विमान के प्रदक्षिणापथ से लगे पाँच अलग–अलग देवालय और आंगन में अन्य देवताओं के आवास बने हैं। मंदिर के सभी स्तंभ नागर शैली में निर्मित हैं। चालुक्य कालीन बेसर शैली की पूर्ण परिणति कैला ा मंदिर में मिलती है। मुख्य मंदिर की बाहरी दीवारों एवं सम्पूर्ण परिसर में लगभग 42 पौराणिक आख्यानों एवं शिव प्रसंगों का भव्य मूर्तन है, जिसमें रावण का कैलाशोत्तोलन, शिव विवाह, शिव ताण्डव, रामायण के प्रसंग, भैरव एवं अन्य देवी–देवताओं का मूर्तन प्रमुख है। (चित्र संख्या–2)

कैलाश के भैरव की मूर्ति जितनी भयानक रूप वाली है, पार्वती प्रतिमा उतनी ही सौम्य है। शिव ताण्डव का ऐसा प्रबल वेग पाषाण में अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं है। शिव विवाह में शिव–पार्वती का परिणय भावी सुख की मर्यादा बांध देता है। वहीं रावण का कैलाशोत्तोलन पौरुष की पराकाष्ठा को परिभाषित करता है। रावण भुजाएं फैलाए कैलाश के सम्पूर्ण

चित्र संख्या–1 ऐलोरा

चित्र संख्या–2 रावण का कैलाशोत्तोलन

तल को पुरजोर हिलाता है, जिससे उसकी संधि तक हिल जाती है। भयसंत्रस्त पार्वती शिव के विशाल भुजदण्ड का आलम्बन ले रही है और अन्य जीव–जन्तु भय से त्रस्त हैं। वहीं शिव अटल–अचलता का भाव लिए अपने पाँव के अंगूठे से पर्वत को हल्के से दबा कर रावण के श्रम को निरर्थक कर देते हैं। ऐलोरा का कैलाशनाथ मंदिर भारतीय वास्तु एवं मूर्तन की श्रेष्ठ उपलब्धि है। अन्य गुफाओं में जैन धर्म को समर्पित गुफा इन्द्रसभा, जिसे छोटा कैलाश भी कहते हैं, अपने अलंकरण एवं मूर्तन में बेजोड़ है। इसमें इन्द्र, इन्द्राणी एवं महावीर भगवान का मूर्तन भव्य बन पड़ा है। गुफा संख्या 21, रामेश्वर मंदिर में शिव ताण्डव, महिषासुरमर्दिनी एवं घ्रूमरेलण गुफा संख्या 29 में शिवविवाह आदि का मूर्तन भी बड़ा ही भव्य एवं भावपूर्ण बन पड़ा है।

ऐलिफेंटा :–

7 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में निर्मित राष्ट्रकूटकालीन गुफा मंदिरों में ऐलिफेंटा का शिव मंदिर प्रमुख है। मुम्बई से 6 मील दूर एक टापू पर स्थित यह मंदिर अपने स्थापत्य एवं मूर्तन के लिए ऐलोरा के समकक्ष माना जाता है। धारापुरी नाम से प्रसिद्ध इस समुद्री टापू पर विशाल पर्वत के ऊपरी भाग को तराश कर मंदिर श्रृंखला का निर्माण किया गया है। (चित्र सं–3)

मुख्य शिव मंदिर अपने प्रवेश द्वार से 60 फीट चौड़ा और 18–20 फीट ऊँचा है। छत चट्टान काट कर बनाए गए अलंकृत स्तंभों पर आधारित है। स्तंभों पर ऐलोरा की भांति देवी–देवताओं एवं अन्य आकृतियों का सुन्दर मूर्तन है। मंदिर के मध्य 18 फीट ऊँची विशाल शिव की त्रिशिरा मूर्ति विराजमान

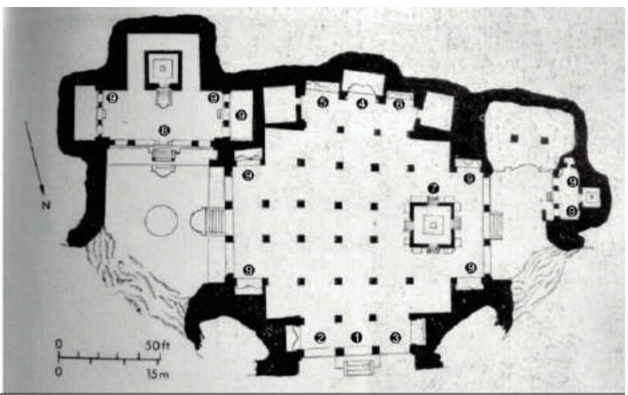

ऐलिफेन्टा,शिव मन्दिर नक्शा
1. मुख्य प्रवेश द्वार 2. शिव योगेश्वर 3. शिव नटराज
4. शिव महेश मूर्ति 5. शिव अर्द्धनारीश्वर 6. शिव गंगाधर
7. शिवलिंग 8. लघु शिव मन्दिर 9. अन्य मूर्ति शिल्प

चित्र संख्या–3

चित्र संख्या–4 त्रिशिरा शिव

है। महेश्वर की प्रकाण्ड मूर्ति, जिसके मुखमण्डलों पर प्रशान्त गंभीरता व्याप्त है, विशाल जटाजूट श्रृंगार से सुशोभित मुकुट उनके संकल्प को प्रतिष्ठित करता है। (चित्र सं–4)

धीर–गंभीर चिंतनशील मस्तक, बोझिल पलकों युक्त नेत्रों से नीचे झांकते शिव, गुप्तकालीन होठ रसपूरित भाव लिये हुए उत्कीर्ण किये गये हैं। बांयी ओर का मुख मण्डल शिव के रौद्र रुपी 'भैरव' संहारक भाव को चरितार्थ करता है, जिसके एक हाथ में नर मुण्ड और कंधे पर झूलते सर्पों का मूर्तन, बल एवं रुप में असाधारण है। वहीं दांयी ओर पार्वती–रूप आकर्षक मुख मण्डल, मोतियों एवं पुष्पों से आच्छादित मुकुट से सुशोभित है और हाथ में कमल–पुष्प सृष्टि के प्रति उनके सौम्य एवं सृजनात्मक भाव को दर्शाते हैं।

महेश्वर शिव की त्रिमूर्ति के दोनों ओर के स्तंभ विष्णु और ब्रह्मा के रूप को मूर्तमान करते हैं। स्तंभ के दांयी ओर अर्द्धनारीश्वर की 16 फीट ऊँची प्रतिमा लोकजीवन में प्रकृति–पुरुष के साहचर्य से सृष्टि के सृजन की प्रतीकात्मकता की द्योतक है। वहीं बांयी ओर शिव विवाह के स्वरूप का लीलाभाव सृष्टि के प्रणय को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त विराट एवं लोमहर्षक शिव नटराज, सृष्टि के संतुलन का और शिव योगेश्वर की प्रतिमा पुरुष के स्वयं की चित्त जागृति (आत्म कल्याण) के आध्यात्मिक स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती है। वहीं शिव गंगाधर का मूर्तन तप एवं श्रम के साध्य को सार्थकता प्रदान करता है।

ऐलिफेंटा के शिव मंदिर का शिल्प विधान

प्रकृति–पुरुष के सम्पूर्ण विस्तार के मनोवैज्ञानिक एवं सौन्दर्यात्मक पक्ष की सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम् की अवधारणा को पुष्ट करता है।

1. प्रवेश द्वार
2. योगेश्वर शिव
3. शिव नटराज
4. महेश मूर्ति (त्रिमूर्ति)
5. अर्द्धनारीश्वर
6. शिव विवाह
7. गर्भ गृह – शिवलिंग
8. शिव प्रसंग – शिव गंगाधर, अंधकठेश्वर शिव
9. अन्य मूर्तिशिल्प

महाबलिपुरम :–

मध्यकालीन मंदिर श्रृंखला में पल्लवकालीन मंदिरों में महाबलिपुरम एवं कांची के समुद्र तट पर निर्मित विशाल मूर्तन अपने समय की गौरव गाथा बयान करते हैं। आठवीं सदी में शैव धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा के फलस्वरूप पल्लववंशीय प्रतापी राजा महेन्द्र वर्मन प्रथम और उसके पुत्र नृसिंह वर्मन द्वितीय ने कांची को राजधानी बनाया। सातवीं सदी के मध्य नृसिंह वर्मन द्वितीय के समय कांची एवं महाबलिपुरम पल्लवकालीन वास्तु एवं मूर्तन के प्रमुख कला केन्द्र बन कर उभरे। इस समय स्थापत्य एवं मूर्तन की एक नवीन द्रविड़ शैली का विकास हुआ। इस शैली में निर्मित 'मामल्ल शैली मंदिर रथ' या पगोड़ा के नाम से जाने जाते हैं। जो शिल्प विधान में भव्य एवं बेजोड़ हैं। (चित्र सं–5)

कांची के प्रमुख मंदिरों में राज सिद्धेश्वर शिव मंदिर, बैकुण्ठ पैरूमल का मंदिर और मांग्तेश्वर का शिव मंदिर आदि पल्लवकालीन स्थापत्यमूर्तन के प्रारंभिक स्वरूप को निश्चित करते हैं। वहीं मामल्ल शैली के विख्यात महाबलिपुरम के विशाल शिल्प इस समय का उत्कर्ष है। महाबलिपुरम के मंदिरों में सात पगोड़ा (सप्त रथ) गंगावतरण, त्रिमूर्ति मंदिर, वराह एवं दुर्गा मंदिर प्रमुख हैं। (चित्र सं–6)

गंगा अवतरण नामक शिल्प अत्यन्त ही दृश्य संकुल पर्वत शिला की दीवार है जो खुले आकाश के नीचे अपनी अनन्त मूर्ति सम्पदा के लिए विश्वप्रसिद्ध है। यह सम्पूर्ण दृश्य 98 फीट ऊँचा और 33 फीट चौड़ा विशाल पाषाण शिल्प 'तीर्थम्' के नाम से पुकारा जाता है, जिसे "भागीरथ की तपस्या" भी कहते हैं। विशाल पाषाण शिला के मध्य एक चौड़ी दरार गंगा के बहाव को परिलक्षित करती है, जिसके दोनों ओर देवों, मानवों, पशुओं, नागों, गजों गंधर्वों एवं विद्याधरों आदि की अनन्त सजीव आकृतियाँ निरूपित हैं। ये सभी आकृतियाँ गंगा की अमृतधारा के बहाव की ओर हाथ जोड़े खड़ी हैं या उस ओर बढ़ती जा रही हैं। गंगा के बहाव के ठीक नीचे पास में दोनों भुजाएं ऊपर उठाए भागीरथ के तपस्या निमग्न रूप का मूर्तन है। वहीं पास में एक बिलाव को भी तपस्यारत दिखया गया है। यह समूची जनसंकुल दृश्य–परम्परा भावाभिव्यंजना एवं मूर्तन की पराकाष्ठा है।

इसके अतिरिक्त 'सप्त रथों' के रूप में पाँच पाण्डव रथ, द्रौपदी रथ व गणेश रथ मुख्य हैं। जिन्हें प्रत्येक को अलग–अलग पर्वत काटकर नवीन द्रविड़ शैली में निर्मित किया गया है। वास्तव में ये सभी शिव मंदिर हैं। इनमें सर्वप्रथम धर्मराज रथ, भीमरथ, सहदेव रथ हैं, जिनकी छतें पिरामिडनुमा हैं और एक के ऊपर एक तीन तल चढ़ते चले गए हैं जो अपने विविध अलंकरणों से सुशोभित हैं। वहीं अर्जुन रथ, नकुल रथ, द्रौपदी रथ और गणेश रथ अपेक्षाकृत साधारण स्तर को दर्शाते हैं। इन रथों की कलात्मक विशेषताओं में पतले कीर्तिमुख सिंह

चित्र संख्या–5 महाबलीपुरम

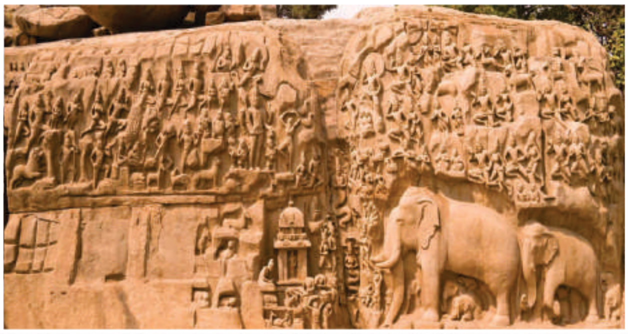

चित्र संख्या–6 गंगा अवतरण

पीठ पर स्थित अलंकृत स्तंभ, मकरतोरण द्वार और चैत्य वातायनीय मेहराबों में 'उत्कीर्ण' मूर्तिशिल्प विशेष दर्शनीय हैं। वराह मंदिर में विष्णु के दस अवतारों का मूर्तन तो है ही, साथ ही दुर्गा, गजलक्ष्मी एवं सूर्यादि तथा राजा महेन्द्र वर्मन को रानियों के साथ उत्कीर्ण किया गया है। महेश मण्डप या दुर्गा मंदिर में महिषासुरमर्दिनी की आक्रामक प्रतिमा अपनी गति एवं ओज के लिए जानी जाती है। इस गुफा मंदिर में शेषशायी विष्णु का अतिविशाल मूर्तन अपनी भव्यता में बेजोड़ है। इसी गुफा में नृसिंह वर्मन को रानियों के साथ उत्कीर्ण किया गया है। पल्लवकालीन कलाओं को उत्तरोत्तर विकास क्रम आने वाले समय में नृसिंह वर्मन द्वितीय के पश्चात अनुगामी राजाओं के शासन काल में निर्बाध रूप से यथावत् रहा।

कोणार्क मन्दिर :–

भारतीय इतिहास में निर्मित सूर्य मंदिरों में सबसे प्रसिद्ध कोणार्क का सूर्य मंदिर भारत के उड़ीसा राज्य के पुरी नगर में स्थित है। तेरहवीं शताब्दी में गंग बंग के राजा नृसिंहदेव द्वारा लाल बलुआ पत्थर एवं काले ग्रेनाइट पत्थर से इसका निर्माण करवाया गया था। यह मंदिर, भारत के प्रसिद्ध स्थलों में से एक है। इसे युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है। कलिंग शैली में निर्मित यह मंदिर सूर्य देव(अर्क) के रथ के रूप में निर्मित है। इसे पत्थर पर उत्कृष्ट नक्काशी करके बहुत ही सुंदर बनाया गया है। संपूर्ण मंदिर स्थल को एक बारह जोड़ी चक्रों वाले, सात घोड़ों से खींचे जाते सूर्य देव के रथ के रूप में बनाया है। इस रथ के पहिए, जो कोणार्क की पहचान बन गए हैं, मंदिर के आधार को सुंदरता प्रदान करते हैं। यह मंदिर अपनी कामुक मुद्राओं वाली शिल्पाकृतियों के लिये भी प्रसिद्ध है। वास्तु दोष एवं आक्रमणों के कारण इस मंदिर का काफी भाग ध्वस्त हो चुका है। यहाँ सूर्य को बिरंचि–नारायण कहते थे। मुख्य मंदिर तीन मंडपों में बना है। इनमें से दो मण्डप ढह चुके हैं। तीसरे मंडप में जहाँ मूर्ति थी अंग्रेजों ने भारतीय स्वतंत्रता से पूर्व ही रेत व पत्थर भरवा कर सभी द्वारों को स्थायी रूप से बंद करवा दिया था, ताकि वह मंदिर और क्षतिग्रस्त ना हो पाए, इस मंदिर में सूर्य भगवान की तीन प्रतिमाएं हैं–

चित्र संख्या–7 चक्र (कोणार्क)

बाल्यावस्था–उदित सूर्य

युवावस्था–मध्याह्न सूर्य

प्रौढावस्था–अस्त सूर्य

इसके प्रवेश पर दो सिंह हाथियों पर आक्रामक होते हुए रक्षा में तत्पर दिखाये गए हैं। दोनों हाथी, एक–एक मानव के ऊपर स्थापित हैं। ये प्रतिमाएं एक ही पत्थर की बनीं हैं। मंदिर के दक्षिणी भाग में दो सुसज्जित घोड़े बने हैं, जिन्हें उड़ीसा सरकार ने अपने राजचिह्न के रूप में अंगीकार कर लिया है। मंदिर सूर्य देव की भव्य यात्रा को दिखाता है। इसके प्रवेश द्वार पर ही नट मंदिर है। ये वह स्थान है, जहाँ मंदिर की नर्तकियां, सूर्यदेव को अर्पण करने के लिये नृत्य किया करती थी। पूरे मंदिर में पुश्प–लताएं और ज्यामितीय नमूनों की नक्काशी की गई है। इनके साथ ही मानव, देव, गंधर्व, किन्नर आदि की आकृतियां भी हैं। यहाँ की शिल्प कलाकृतियों का एक संग्रह, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के सूर्य मंदिर संग्रहालय में सुरक्षित है।

कोणार्क का सूर्य मन्दिर बारह जोड़ी पहियों वाले रथ पर बनाया गया है। ये पहिये बारह महिनों के प्रतीक माने जाते हैं। इन पहियों की ऊंचाई दस फीट है। मन्दिर के पूर्व एवं पश्चिम दिशा में बने दो पहिये (चक्र) सूर्य चक्र के नाम से जाने जाते हैं। इन पहियों में बनी आठ मुख्य आरें दिन के आठ प्रहरों को दर्शाती है। (चित्र संख्या–7) आठ मुख्य अरों के एकान्तर में आठ पतली अरें भी बनी है। पहिये के किनारे पर दो मुख्य अरों के बीच साठ मनकों की श्रृंखला समय की सटीक जानकारी प्रदान करती है। पहिये पर फूल–पत्तों व पशु आकृतियों का

चित्र संख्या–8 मंजीरा वादिका

अलंकरण देखा जा सकता है। मुख्य अरों के मध्य मे दर्पण देखती स्त्री, अंगड़ाई लेती स्त्री आदि दृश्यों को उत्कीर्ण किया गया है।

सूर्य मंदिर के शिखर पर कुछ स्वतंत्र मूर्तिशिल्प वादिकाओं (जैसे बांसुरी वादिका, मंजीरा वादिका) के बने हैं। इनमें से एक मूर्तिशिल्प नृत्यरत मुद्रा में मंजीरा वादिका का है। (चित्र सं–8) इसमें मंजीरा वादिका को त्रिभंगीय मुद्रा में बनाया गया है। वादिका की मुखाकृति गोल, नयन मीनाकृत, केश विन्यास सुन्दर तथा चेहरे पर मुस्कान सुशोभित है। वस्त्राभूषणों के रूप में कानों में कुण्डल, गले में हार, हाथों पर भुजबंद व कड़े, कमर पर करधनी, सिर पर मुकुट एवं अधोवस्त्र धारण किये हुए है। वादिका को सम्पूर्ण नारी तत्वों से अलंकृत किया गया है, जिससे यह आकृति अत्यन्त मनोहारी एवं लावण्य युक्त दिखाई देती है।

खजुराहो :–

मध्यकालीन मूर्तिकला का उत्कृष्ट केन्द्र खजुराहो मध्य प्रदेश के छत्तरपुर जिले में स्थित एक छोटा–सा कस्बा है लेकिन अद्भुत मंदिरों की वजह से यह विश्व प्रसिद्ध है। 1838 में एक ब्रिटिश इंजीनियर कैप्टन टी.एस. बर्ट ने इन मन्दिरों की खोज की और उनका अलंकारिक विवरण बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी के समक्ष प्रस्तुत किया। खजुराहों के स्मारक अब भारत के पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग की देखभाल और निरीक्षण में हैं। कलानुरागी चंदेल वंशीय शासकों ने लगभग 84 मंदिरों का निमार्ण करवाया था, लेकिन उनमें से अभी सिर्फ 22 मंदिर ही ज्ञात हैं, यद्यपि दूसरे पुरावशेषों के प्रमाण प्राचीन टीलों तथा बिखरे वास्तुखंडों के रूप में आज भी खजुराहो तथा इसके आसपास देखे जा सकते हैं। सामान्य रूप से यहाँ के मंदिर बलुआ पत्थर (सैण्ड स्टोन) से निर्मित किए गए हैं, लेकिन चौंसठ योगिनी, ब्रह्मा तथा ललगुआँ महादेव मंदिर ग्रेनाइट (कणाष्म) से निर्मित हैं। ये मंदिर शैव, वैष्णव तथा जैन संप्रदायों से सम्बंधित हैं। ये मंदिर मध्य भारत की स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यहाँ मंदिर बिना किसी परकोटे के ऊँचे चबूतरे पर निर्मित किए गए हैं। आमतौर पर इन मंदिरों में गर्भगृह, अंतराल, मंडप तथा अर्धमंडप देखे जा सकते हैं। यहाँ की प्रतिमाऐं विभिन्न भागों में विभाजित की गई हैं। जिनमें प्रमुख प्रतिमा परिवार, देवता एवं देवी–देवता, अप्सरा, विविध प्रतिमाऐं, जिनमें मिथुन आदि सभी प्रकार की प्रतिमाओं का परिमार्जित रूप यहाँ स्थित मंदिरों में देखा जा सकता है। यहाँ मंदिरों में जड़ी हुई मिथुन प्रतिमाऐं सर्वोत्तम शिल्प की परिचायक हैं, जो कि दर्शकों की भावनाओं को अत्यंत उद्वेलित व आकर्षित करती हैं। यहाँ के प्रमुख मंदिरों में लक्ष्मण, विश्वनाथ, कंदरिया महादेव, जगदम्बा, चित्रगुप्त, दूल्हादेव, पार्श्वनाथ, आदिनाथ, वामन, जवारी, तथा चतुर्भुज इत्यादि हैं। खजुराहो चंदेल शासकों के प्राधिकार का प्रमुख स्थान था, जिन्होंने यहाँ अनेकों तालाबों, शिल्पकला की भव्यता और वास्तुकलात्मक सुंदरता से सजे विशालकाय मंदिर बनवाए। यशोवर्मन ने विष्णु का मंदिर बनवाया जो अब लक्ष्मण मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। विश्वनाथ, पार्श्वनाथ और वैद्यनाथ के मंदिर राजा डांगा के समय के हैं जो यशोवर्मन के उत्तरवर्ती थे। खजुराहो का सबसे बड़ा और महान मंदिर अनश्वर कंदरिया

चित्र संख्या–9 कंदरिया महादेव

महादेव का है। इसके अलावा कुछ अन्य उदाहरण हैं जैसे कि वामन, आदि नाथ, जवारी, चतुर्भुज और दूल्हादेव कुछ छोटे मंदिर हैं। खजुराहो का मंदिर समूह अपनी भव्य छतों (जगती) और कार्यात्मक रूप से प्रभावी योजनाओं के लिए भी उल्लेखनीय है। यहाँ की शिल्पकलाओं में धार्मिक छवियों के अलावा परिवार, दिकपाल और अप्सराएँ भी हैं। यहाँ वेशभूषा और आभूषणों की भव्यता मनमोहक है। वास्तुकला और मूर्तिकला की दृष्टि से खजुराहो के मन्दिरों को भारत की सर्वोत्कृष्ठ कलाकृतियों में स्थान दिया जाता है। खजुराहो में विराजमान बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा के प्राप्त होने से यह संकेत मिलता है कि इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म का भी प्रचलन था।

खजुराहो की मिथुन प्रतिमाएं

इन मूर्तियों के बारे में भिन्न भिन्न व्याख्याएँ व विचार हैं। कुछ की मान्यता है कि ये प्रतिमाएँ समकालीन समाज की जर्जर व कमजोर नैतिकता का प्रतिनिधित्व करती हैं। कुछ की धारणा है कि यह कामशास्त्र के पौराणिक ग्रंथों के रत्यात्मक आसनों का निदर्शन है। यह भी माना जाता है कि ये प्रतिमाएँ, कुछ विशेष मध्यकालीन भारतीय पंथ जो कि कामुक कृत्य को धार्मिक प्रतीकवाद मानते थे, का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये लोग मोक्ष पाने के लिए योग तथा भोग दोनों ही मार्गों का अनुसरण करते रहे होंगे। भारतीय कला, साहित्य तथा लोक परम्परा में हमेशा ही ऐसी मूर्तियों की उपस्थिति रही है। मिथुन प्रतिमाएँ तो शुंग काल की मूर्तिकला तथा मृण मूर्तियों में भी मौजूद थी।

लक्ष्मण मन्दिर, खजुराहो– यह वैष्णव मंदिर है। इस मंदिर को 930 से 950 ईस्वी के बीच, चंदेल शासक यशोवर्मन ने बनवाया था। इस मंदिर की लम्बाई 29 मीटर तथा चौड़ाई 13 मीटर है। स्थापत्य तथा वास्तु कला के आधार पर, बलुआ पत्थरों से बने मंदिरों में लक्ष्मण मंदिर सर्वोत्तम है। ऊँची जगत पर स्थित इस मंदिर के गर्भगृह में विष्णु की मूर्ति अलंकृत तोरण के बीच स्थित है। पूरा मंदिर एक ऊंची जगत पर स्थित होने के कारण मंदिर में विकसित इसके सभी भाग देखे जा सकते हैं। जिनके अर्द्धमंडप, मंडप, महामंडप, अंतराल तथा गर्भगृह में, मंदिर की बाहरी दीवारों पर प्रतिमाओं की दो पंक्तियां जिनमें देवी देवतागण, युग्म और मिथुन आदि हैं। मंदिर के बाहरी हिस्से की दीवारों तथा चबूतरे पर युद्ध, शिकार, हाथी, घोड़ों, सैनिक, अप्सराओं और मिथुनाकृतियों के दृश्य अंकित हैं। सरदल के मध्य में लक्ष्मी है तथा दोनों ओर ब्रह्मा एवं विष्णु हैं।

कंदरिया महादेव :– कंदरिया महादेव मंदिर, खजुराहो के मंदिरों में सबसे बड़ा, ऊंचा और कलात्मक यही मंदिर है। (चित्र संख्या–9) यह मंदिर 109 फुट लम्बा, 60 फुट चौड़ा और 116 फुट ऊँचा है। इस मन्दिर के सभी भाग– अर्द्धमण्डप, मण्डप, महामण्डप, अन्तराल तथा गर्भगृह आदि, वास्तुकला के बेजोड़ नमूने हैं। गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणापथ है। यह मंदिर शिव को समर्पित है तथा इस मंदिर में शिवलिंग के अलावा अन्य देवी–देवताओं की कलात्मक मूर्तियाँ मन मोह लेती हैं। मन्दिर के प्रत्येक भाग में केवल दो और तीन फुट ऊँची मूर्तियों की संख्या ही 872 है। छोटी मूर्तियाँ तो असंख्य हैं। पूरी समानुपातिक योजना, आकार, आकर्षक मूर्तिकला एवं भव्य वास्तुकला की वजह से यह मंदिर मध्य भारत में अपनी तरह का शानदार मंदिर है। मंदिर में सोपान द्वारा अलंकृत कीर्तिमुख, नृत्य दृश्य युक्त तोरण द्वार से प्रवेश किया जा साकता है। बाहर से देखने पर इसका मुख्य द्वार एक गुफा यानी कि कंदरा जैसा नजर आता है, शायद इसीलिए इस मंदिर का नाम कंदरिया महादेव पड़ा है। गर्भगृह के सरदल पर विष्णु, उनके दाएँ ब्रह्मा एवं बाएँ शिव दिखाए गए हैं। चमड़े से जबरदस्त घिसाई करने के कारण यहाँ की मूर्तियों को दूर से देखने पर लगता है जैसे आप सैंड स्टोन से बने मंदिर को

नहीं बल्कि चंदन की लकडी से बनी कलाकृतियां देख रहे हैं। (चित्र संख्या–10) खजुराहो में 64 योगिनियों का खुला मन्दिर, खुरदुरे ग्रेनाइट पत्थर का बना हुआ है। उत्तरमुखी इस मन्दिर का निर्माण 900 ईस्वी में हुआ माना जाता है। जबकि 10वीं शताब्दी के मध्य में बने नागर शैली के उत्कृष्ट मन्दिर, चिकने बलुआ पत्थर से निर्मित हैं। यहाँ से ब्रह्माणी, इंद्राणी व महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमाऐं प्राप्त हुई हैं।

खजुराहो में आठ जैन मन्दिर भी हैं। जैन मन्दिरों की वास्तुकला अन्य मन्दिरों के शिल्प से मिलती–जुलती है। सबसे बड़ा मन्दिर पार्श्वनाथ का है, जिसका निर्माण काल 950–1050 ई. है। यह 62 फुट लम्बा और 31 फुट

चित्र संख्या–10 अलंकृत स्तम्भ(खजुराहो)

चौड़ा है। इसकी बाहरी भित्तियों पर तीन पंक्तियों में जैन मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं।

कन्दरिया महादेव मंदिर की बाहरी दीवारों पर अलंकरण का दृश्य कन्दरिया महादेव मंदिर की बाहरी दीवारों पर देवी–देवता, प्रमी–प्रेमिका एवं देवदूतों आदि की आकृतियों का विभिन्न मुद्राओं में उत्कीर्णन किया हुआ है। चित्र में संदर्भित दृश्य में विशेषतः नारी आकृतियों को विभिन्न भाव–भंगिमाओं में श्रृंगार रस के साथ दर्शाया गया है। नारी आकृतियों के चेहरे अण्डाकार, गोल व किंचित मुस्कान युक्त है तथा आंखें लम्बी व भौहें धनुषाकार हैं। इन मूर्तिशिल्पों में मांसल शरीर व क्रिया शीलता का सुन्दर समन्वय किया गया है। दैनिक क्रियाकलापों का आध्यात्मिक भावनाओं के साथ प्रस्तुतिकरण इन मूर्ति शिल्पों में देखा जा सकता है।

चोल कालीन कांस्य मूर्तिशिल्प :–

नटराज – यह मूर्तिशिल्प कांस्य धातु का बना हुआ है, जिसमें शिव को एक पैर पर खड़ी मुद्रा में नृत्य करते हुए ढ़ाला गया है। इसमें शिव को ताण्डव नृत्य करते हुए दिखाया गया है, जिसमें शिव की चार भुजाएँ विभिन्न मुद्राओं में है। शिव के दाहिने हाथ में स्थित डमरू की ध्वनि को सृजन का प्रतीक तथा दूसरे दाहिने हाथ की अभय मुद्रा को बुराईयों से रक्षा के प्रतीक के रूप में माना जाता है। बाएं हाथ की हथेली पर अग्नि को विनाश के प्रतीक के रूप में दिखाया गया है। दूसरा बांया हाथ उठे हुए बायें पैर की ओर इंगित करते हुए है। दायें पैर के नीचे अज्ञानता रूपी बौना राक्षस दबा पड़ा है। शिव के गले व हाथों में लहराते सर्प कुण्डलिनी शक्ति का परिचायक है। ब्रह्माण्ड के प्रतीक के रूप में ज्वालाओं को घेरे के रूप में बनाया गया है।

(चित्र संख्या–11)

इस सम्पूर्ण संयोजन में संतुलन एवं गति को भाव एवं सौन्दर्य के साथ प्रस्तुत किया गया है। इसमें भारतीय कला के सम्पूर्ण सिद्धान्तों को प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है। यह मूर्तिशिल्प दिल्ली के संग्रहालय में सुरक्षित है।

चित्र संख्या–11 नटराज

उमा पार्वती :–चोल शासन काल में बनी अनेक कांस्य प्रतिमाऐं प्राप्त हुईं है, जिनमें शिव (नटराज) के प्रतिमाओं के अलावा शिव की अर्धांगिनी उमा (पार्वती) के भी अनेक मूर्तिशिल्प विशेष रूप से उल्लेखनीय है। देवी उमा की इस

प्रतिमा में नारी सौन्दर्य को करूणा, वात्सल्य, प्रेरणा, शक्ति एवं आध्यात्मिकता के साथ संजोया गया है। त्रिभंगीय मुद्रा में देवी का दांया पैर कुछ आगे निकला हुआ है एवं शरीर का सम्पूर्ण भार बांए पैर पर प्रतीत होता है। बांया हाथ नीचे की ओर तिरछा एवं दायां हाथ ऊपर की ओर वक्षस्थल तक उठा हुआ है। मुखमण्डल पर शान्त भाव लिए हुए सम्पूर्ण शरीर नृत्यरत मुद्रा में है।

चित्र संख्या–12उमा(पार्वती)

वस्त्राभूषणों के रूप में अधोवस्त्र, सिर पर मुकुट एवं गले में हार, हाथों में कंगन, कमर में करधनी आदि का अलंकरण किया गया है। देवी के अंग प्रत्यंगों के छरहरेपन, तीखे नक्श एवं भावपूर्ण मूर्तन से सौन्दर्य सिद्धान्तों को परिलक्षित किया गया है।(चित्र सं–12)

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. मध्यकाल में बौद्ध हिन्दु और जैन धर्म से सम्बन्धित मूर्तन हुआ है।
2. एलोरा के सभी मंदिर बारदरी शैली (एकाश्म शैली) के हैं।
3. मध्यकालीन मंदिरों में महाबलीपुरम कांची के समुद्र तट पर निर्मित विशाल मंदिर है।
4. कोणार्क मंदिर सूर्य मंदिरों में सबसे प्रसिद्ध मंदिर स्थापत्य है।
5. 1838 में ब्रिटिश इंजीनियर कैप्टन टी.एसबर्ट ने खजुराहों मंदिरों की खोज की।
6. नटराज के मूर्तिशिल्प में भगवान शिव को ब्रह्माण्ड के प्रतीक रूप दिखाया है।
7. राजा कृष्ण राय प्रथम ने विश्व प्रसिद्ध कैलाश नाथ का मंदिर का निर्माण करवाया।

अभ्यास प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मध्यकालीन मूर्तिकला के प्रमुख केन्द्रों के नाम लिखो।
2. ऐलोरा के कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण कब और किसने करवाया ?
3. ऐलिफेंटा के गुफा मंदिर किस धर्म से सम्बन्धित हैं, और कहाँ स्थित है ?
4. महाबलिपुरम के मुख्य मूर्तिशिल्प के नाम लिखो।
5. चोल कालीन कोई दो मूर्तिशिल्पों के नाम बताएं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. कोणार्क की प्रमुख मूर्तियों का उल्लेख करो।
2. नटराज मूर्ति किस माध्यम में निर्मित है व किस काल में बनी ?
3. गंगा अवतरण शिल्प का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. मध्यकालीन मूर्तिकला पर निबन्ध लिखिए।
2. ऐलिफेंटा के वास्तु एवं मूर्तन की कलात्मक विशेषताएं लिखिए।
3. महाबलिपुरम के मूर्तिशिल्पों पर एक लेख लिखिए।
4. खजुराहों की मूर्तिकला पर विस्तार से टिप्पणी लिखिए।